साक्षात्कार*

साक्षात्कार दुनिया की व्याख्याओं को प्रकाश में लाता है, क्योंकि यह स्वयं व्याख्या का एक विषय है। पर असल में साक्षात्कार दुनिया की व्याख्या नहीं है। बल्कि यह अपने द्वारा बनाई गई दुनिया से एक व्याख्यात्मक सम्बन्ध रखता है।

-डेंजिन (2001, पृ. 30)

साक्षात्कार, सामाजिक विज्ञान में डाटा के संग्रह का सबसे सर्वव्यापी उपाय हो सकता है। दरअसल होलस्टीन और गुब्रियम (Holstein and Gubrium 1995) अनुमान लगाते हैं कि सामाजिक विज्ञान के 90% शोधों में साक्षात्कार द्वारा डाटा इकट्ठे किए जाते हैं। डेंज़िन (Denzin, 2001) सुझाते हैं कि एक तरह से हम साक्षात्कार वाला समाज ही बन चुके हैं जिसमें साक्षात्कार बहुत से सामाजिक सन्दर्भों में बातचीत का प्राथमिक तरीका है (जैसे कि किसी की चिकित्सा का इतिहास देना) और साथ ही प्रिंट और बिना प्रिंट मीडिया दोनों में दर्शाया गया बातचीत का तरीका भी है। बच्चे और वयस्क समान रूप से अपने सांस्कृतिक ज्ञान के तहत साक्षात्कार के रूप से परिचित होते हैं, और इसलिए यह हैरानी की बात नहीं है कि साक्षात्कार सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा पसन्द किया जाता है।

शोध में साक्षात्कार के कई रूप हो सकते हैं- सहभागी अवलोकन में अध्ययन के समय होने वाली अनौपचारिक बातचीत से लेकर अर्ध-संरचित बातचीत, जिसमें अलग समय और स्थान की जरूरत पड़ती है। सहभागी अवलोकन की पद्धतियों के विपरीत, जिसमें सामान्यतया युवा प्रतिभागियों को गतिविधि की प्रकृति निर्धारित करने की या बातचीत का विषय निर्धारित कर पाने की अनुमति होती है, साक्षात्कार अपनी संरचना की प्रकृति के अनुसार, अधिकतर शोधकर्ता द्वारा ही नियोजित किया जाता है। जैसा कि हम इस अध्याय में चर्चा करेंगे ,साक्षात्कार प्रतिभागी के लिए बातचीत को निर्देशित करने के अवसर बाधित नहीं करता है; बल्कि सामान्यतः कुछ पूर्व निर्धारित विषयों पर या मुद्दों पर बात करने का अवसर प्रदान करता है।

* Researching Children's Experiences पुस्तक से उद्धृत।

बच्चों से व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से साक्षात्कार करना अपने आप में एक सन्तोषजनक काम है। साक्षात्कार कहानी के अंशों, सामाजिक अनुभवों के कथात्मक वर्णन और वक्ता के लिए इसके सम्भावित अर्थ प्रकट करता है। नियोजन, विवरण पर ध्यान, रूपरेखा (design) के लचीलेपन तथा इस विश्वास के साथ कि बच्चों और किशोरों की बातें सुनने के लायक हैं इन सब मान्यताओं से ऐसी सम्भावना बनती है कि साक्षात्कार अच्छा जाएगा, शायद जैसी योजना बनाई थी वैसा न जाए और शायद अपेक्षित परिणाम ना मिले, परन्तु फिर भी यह एक सकारात्मक अनुभव होगा। एक सामाजिक रचनावाद ढाँचे में व्यक्तिगत और सामूहिक साक्षात्कार को एक सामाजिक घटना के तौर पर देखा जाता है जो बच्चों को साक्षात्कार में हुए वार्तालाप के अन्तर्गत हुई घटनाओं और अनुभवों की व्याख्या करने में सक्षम बनाता है।

व्यक्तिगत साक्षात्कार बच्चों और किशोरों को किसी मुद्दे पर अपने विचारों को प्रकट करने, अनुभव साझा करने या एक घटना पर चिन्तन करने के लिए एक निजी माहौल प्रदान करता है। इसका उद्देश्य किसी विशेष विषय के सम्बन्ध में एक बच्चे पर या बच्चों और वयस्कों के बीच के वार्तालाप पर ध्यान देना है। सामूहिक साक्षात्कार, शोधकर्ता का ध्यान सभी प्रतिभागियों की तरफ लाता है और साथ ही बच्चों को आम विषयों पर अपने साथियों से बातचीत का माहौल प्रदान करता है।

स्कूलों में राज्य द्वारा अनिवार्य की गई परीक्षा के विषय पर छात्रों के अनुभव जानने के लिए किए गए हमारे अध्ययन में, आठवीं कक्षा के प्रतिभागियों ने परीक्षा तथा परीक्षा की तैयारी के बारे में अपने सहपाठियों के विचार सुनने के अवसर की सराहना की। समूहों में बच्चों का साक्षात्कार लेना , शोध के सन्दर्भ में शोधकर्ता के प्रभाव को कम कर सकता है क्योंकि साथियों की उपस्थिति आमतौर पर शोधकर्ता की उपस्थिति पर प्राथमिकता ले लेती है।

तालिका 6.1 दर्शाती है कि 9 साल के बच्चे समूह में बैठने, शोधकर्ता के प्रश्नों और सहपाठियों की प्रतिक्रियाओं को सुनने और अपने खुद के अनुभवों को साझा करने में काफी सक्षम होते हैं। यह कहना कि वे ऐसा कर सकते हैं इसका मतलब यह नहीं है कि वे हमेशा ही ऐसा करेंगे या ऐसी बातचीत को संचालित करना एक आसान काम है।

शोधकर्ता : वह कौन सी सबसे महत्त्वपूर्ण तकनीक थी जो आपने अँग्रेज़ी भाषा की कला परीक्षा के लिए इस्तेमाल की?

काईल : पहली बार जब हम खाली स्थान भरने का अभ्यास कर रहे थे, तब शायद सबसे महत्त्वपूर्ण तकनीक थी प्रश्नों को पढ़ना और फिर दोबारा से कहानी को पढ़ना।

शोधकर्ता : अच्छा, तो तुमने पहले प्रश्न पढ़े और फिर तुमने दोबारा कहानी पढ़ी।

काईल : हाँ, पहले दिन।

आन्द्रे : मैंने जो सबसे महत्त्वपूर्ण तकनीक इस्तेमाल की या शायद महत्त्वपूर्ण नहीं भी रही हो, वह यह है कि मैंने अध्यापक के पास जाकर पूछा कि क्या मैं उन्हें पढ़कर सुना सकताहूँ? और जब मैंने उन्हें पढ़कर सुनाया तब मुझे समझ में आया। (मेगन-हाँ) कई बार आप कोई शब्द छोड़ देते हैं, और आपको नहीं पता होता कि वह क्या है पर जब आप शिक्षक से जाकर बोलते हैं, "मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है" तब वह अकसर आपको पढ़कर सुनाने को कहती है और तब आपको वह समझ आ जाता है।

शोधकर्ता : तो आप को पढ़कर सुनाने से मदद मिलती है।

आन्द्रे : हाँ।

मेगन : मैंने कभी ऐसा करने का सोचा नहीं पर मुझे यह विचार अच्छा लगा।

शोधकर्ता : क्या तुम्हारे पास कोई सबसे खास तकनीक है?

मोरगन : मेरी सबसे खास तकनीक है प्रश्नों को पढ़ना, मेरा मतलब है, प्रश्नों को एक से ज्यादा बार पढ़ना और अगर आप चाहें तो प्रश्न एक बार पढ़ कर फिर कहानी पढ़ सकते हैं। इससे कम समय लगता है और यदि आपको किताब में उत्तर मिल जाए तो आपको उसके बारे में जो भी लिखना है आप उसे लिख सकते हैं।

मेगन : हाँ जब मुझे लिखकर उत्तर देने वाले प्रश्न करने होते हैं, तब मैं प्रश्न पढ़ने के बाद उन सब के शुरुआती वाक्य लिख देती हूँ और फिर मैं बार-बार पढ़कर उनको अन्त तक भरती रहती हूँ। इसके बाद मैं शुरू से पढ़ती हूँ और भरती जाती हूँ यदि कुछ समझ में नहीं आता तो उसे छोड़कर अगले प्रश्न पर चली जाती हूँ। इस प्रकार सबसे मुश्किल प्रश्न अन्त के लिए रह जाते हैं और तब मैं शान्ति से बैठकर उन पर अच्छे से ध्यान केन्द्रित कर सकती हूँ क्योंकि ऐसे एक या दो ही प्रश्न बचे होते हैं। यदि मैं ऐसा नहीं करती और पूरा समय उन कठिन प्रश्नों पर ही खर्च कर देती तो बाकी प्रश्न बिना जवाब दिए रह जाते।

तालिका 6.1. (चौथी कक्षा के उपनगरीय छात्रों के साथ एक समूह साक्षात्कार के अंश)

यह सामूहिक साक्षात्कार तब हुआ जब एक परीक्षा के दौरान 12 प्रतिभागी विद्यार्थियों को दो समूहों में बाँटा गया और उन्हें खुद का चित्र बनाने के लिए समय दिया गया। उनकी परीक्षा लेते समय, यह कहा गया कि वे एक दूसरे की बात को सुनते हुए, परीक्षा के दौरान अपनी भावनाओं का वर्णन करें और चित्र के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करें। शोधकर्ता ने एक बार छोटे समूह में भूमिका निभाने (role-playing approach) की विधि का उपयोग किया जिसमें वे स्वयं अखबार की रिपोर्टर की भूमिका अदा कर रही थीं जिसकी रुचि यह जानने में थी कि प्रत्येक विद्यार्थी चित्र के माध्यम से खुद को कैसे दर्शाता है। यह तरीका लगभग सभी प्रतिभागियों के साथ अच्छे से हुआ, हालाँकि एक समूह बेतहाशा हँसने लगा क्योंकि एक लड़का रिपोर्टर का अभिनय कर रही शोधकर्ता के पीठ पीछे साक्षात्कार देने वाले विद्यार्थी को देखकर हास्यप्रद हरकतें कर रहा था।

यह अध्याय व्यक्तिगत और सामूहिक साक्षात्कार के गुणों और कमजोरियों का वर्णन करता है। इसके बाद यहाँ बच्चों से साक्षात्कार के दौरान प्रतिक्रिया प्राप्त करने के ऐसे विभिन्न तरीकों को प्रस्तुत किया गया है जो दिलचस्प, खुले (open-ended) हैं और जो विश्वसनीय माने जाते हैं। जैसा कि हमने अध्याय 4 में चर्चा की है कि शोधकर्ता और प्रतिभागी के बीच के सम्बन्ध, उस स्थान का माहौल जहाँ साक्षात्कार या शोध होने वाला है और साक्षात्कार को प्रयोग करने के कारणों पर विचार करना आवश्यक है।

एक सम्बन्ध के रूप में साक्षात्कार

एक सामाजिक रचनावादी नजरिए से देखा जाए तो साक्षात्कार एक ऐसा रिश्ता है जिसमें शोधकर्ता और प्रतिभागी मिलकर एक पटकथा (नैरेटिव), एक कहानी का अनुभव तैयार करते हैं जिससे भौतिक दुनिया के कुछ अनुभव और इसकी समझ मिलती है। एक साक्षात्कार को "साक्षात्कारदाता की स्वयं की 'प्रामाणिक आवाज' के रूप में नहीं देखा जा सकता है" (Alldred& Burman, 2005, पृ. 181); यह सच्चे वैयक्तिक आत्म का वर्णन नहीं है और न ही यह किसी बाहरी दुनिया का प्रतिबिम्ब है। वास्तव में कोई एक सच्चा वैयक्तिक आत्म नहीं है और न ही कोई एक बाहरी दुनिया उजागर होने को है, यह सिर्फ अनुभव और अर्थ का एक प्रासंगिक प्रस्तुतीकरण है। साक्षात्कार अपने आप में अर्थ और अनुभव के सह निर्माण की कहानी है। चित्र 6.1 में शोधकर्ता के अनुभव उसके द्वारा पूछे गए प्रश्नों में दिखते हैं जैसे– इस स्थिति में परीक्षा देते समय बच्चे किस प्रकार की कार्यनीति इस्तेमाल में लाते हैं इसके

बारे में पूछे गए प्रश्न। परीक्षण के समय में इन बच्चों की योजनाबद्ध भागीदारी की कहानी को शोधकर्ता और साक्षात्कार में शामिल सभी बच्चों द्वारा मिलकर लिखा गया है।
सभी साक्षात्कारों की यह आवश्यकता होती है कि प्रतिभागी अन्य मुद्दों के अलावा यह भी निर्धारित करें कि साक्षात्कार का क्या उद्देश्य है, उनका खुद का साक्षात्कारकर्ताओं से क्या सम्बन्ध है, समूह की स्थिति में अन्य साथियों की उपस्थिति के साथ वे कैसे तालमेल बनाएँगे, विशिष्ट सवालों का अर्थ, विभिन्न गतिविधियों की दिशा और सामाजिक घटना में शामिल होने के कहे और अनकहे नियम आदि कैसे निर्धारित करेंगे। साक्षात्कारकर्ता और साक्षात्कार देने वाले में सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भी सन्दर्भों, साक्षात्कारकर्ताओं, विषयों, दिन का समय और प्रतिभागियों की आयु का अन्तर आदि, इन सभी को ध्यान में रखना होगा ताकि वांछित विषय पर उच्च गुणवत्ता के डाटा प्राप्त हो सकें। यह याद रखना जरूरी है कि साक्षात्कार एक रोजमर्रा की बातचीत नहीं है। इसलिए साक्षात्कार के समय उचित व्यवहार अकसर जरूरी होता है। खासकर बच्चों के साथ साक्षात्कार के दौरान जो सम्भवतः इसे अध्यापकों और पेशेवरों के साथ होने वाली अन्य मिलती-जुलती गतिविधियों की तरह समझेंगे।

जब शोध परियोजना को इस ढंग से बताया जाता है कि बच्चे समझ सकें तो वे निश्चय ही फैसला करने में समर्थ होते हैं कि उनका साक्षात्कार किया जाए या नहीं। हालाँकि साक्षात्कार के विषय के अनुसार बच्चों को यह भी स्पष्ट कर देना जरूरी है कि साक्षात्कार की वजह से क्या काम हो सकते हैं, उनकी जीवन शैली में या स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति में क्या परिवर्तन आ सकते हैं या नहीं आ सकते हैं। यह स्पष्ट करना भी ज़रूरी है कि यह साक्षात्कार क्यों आवश्यक है, खासकर उन बच्चों के लिए जो ट्यूटर, थेरेपिस्ट, और परामर्शदाताओं के साथ मिलते-जुलते सम्बन्धों में शामिल हैं। इन मामलों में, साक्षात्कार के दौरान होने वाली बातचीत स्पष्ट तौर पर समस्याओं की पहचान करने के लिए और सुधार की सम्भावनाओं के लिए हो सकती है। परन्तु शोध के साक्षात्कार में कभी-कभी इसे बिना प्रमाण के सही मान लिया जाता है। इसलिए शोध के लिए होने वाले साक्षात्कार की सीमाएँ स्पष्ट होनी चाहिए।

साक्षात्कार की प्रभावशीलता, शोधकर्ता और प्रतिभागियों के बीच निकटता और आत्मीयता शोधकर्ता और प्रतिभगियों के बीच की बातचीत व साक्षात्कार के उद्देश्यपूर्ण होने पर निर्भर करती है। प्रतिभागियों को किसी एक विषय के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। बातचीत का निजी स्वरूप शोधकर्ता को और सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए, गहरी जाँच करने, “अस्पष्ट और भ्रामक, यहाँ तक कि प्रतिवादक सूचना को, संवेदनशीलता तथा व्यवस्थित

ढंग” से जाँच करने का लचीलापन प्रदान करता है (Rogers, Casey, Ekert & Holland, 2005, पृ. 159)। ये पहलू साक्षात्कार में भाग लेने वालों को अपने अनुसार उत्तर देने, अपनी शर्तें लागू करने और साक्षात्कार के विषय से अपना सम्बन्ध स्थापित करने की स्वतंत्रता देता है। साक्षात्कार बच्चों और युवाओं को, वयस्कों की भाषा और समझ को इस्तेमाल करने की बजाय, अपनी भाषा और अपना मत इस्तेमाल करने का अवसर देता है। “साक्षात्कार करने वाले शोधकर्ता की मुख्य चुनौती सम्बन्धों का प्रबन्धन होती है ताकि ये व्यक्तिपरक डाटा को एकत्रित करने में मदद तो करें परन्तु उन्हें अशुद्ध न करें” (Parker, 1984, पृ. 19)। इसके लिए शोधकर्ता को न केवल साक्षात्कार का निर्देशन बल्कि साक्षात्कार में अपनी भूमिका का निरीक्षण और इसे स्वीकार करना चाहिए।

बच्चों और साक्षात्कारकर्ताओं की दक्षताएँ

छोटे बच्चों की भाषा की दक्षता के बारे में हम क्या जानते हैं इस पर टिप्पणी करते हुए कोल्स (Coles, 1996) इस बात के दो उदाहरण देते हैं कि कैसे हमारे प्रश्न भाषा और अर्थ के बारे में हमारे विचार बताते हैं। जब भाषा को अर्थ और जानकारी के संवाद के माध्यम के रूप में देखा जाता है तब हमारे प्रश्नों को उस ज्ञान को पाने के साधन के रूप में देखा जाता है, बहुत कुछ “अध्यापक के सवालों की तरह जो तुरन्त, संक्षिप्त और तथ्य आधारित उत्तर चाहते हैं और बच्चों को प्रतिक्रिया देने, वर्णन करने या कारण बताने का बहुत कम समय देते हैं” (पृ. 13)। लेकिन जब भाषा और अर्थ एक दूसरे से जुड़े होते हैं और एक दूसरे को रूप देते हैं तब हमारे प्रश्नों में एक खास किस्म की प्रभावशीलता होती है क्योंकि उनकी भूमिका होती है कि उस विचार को वास्तविक बनाया जाए, जिसे अभी तक सोचा ही नहीं गया है और जो अभी भी केवल एक सम्भावना है (पृ. 14)। एक सामाजिक रचनावादी साक्षात्कार की भूमिका दूसरे प्रकार की होती है, जिसका मतलब है कि अर्थ के सह निर्माण का अवसर।

हालाँकि साक्षात्कारदाता के तौर पर बच्चों की दक्षताओं के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, लेकिन ये दक्षताएँ एक दूसरे के साथ सम्बन्ध बनाने और संवाद करने के साक्षात्कारकर्ता और साक्षात्करदाता के आपसी तालमेल पर आधारित हैं। बच्चों के साथ किए गए अभी तक के कई अध्ययनों से पता चला है कि बहुत कम उम्र में भी बच्चों के पास शोध में भाग लेने की क्षमता होती है। वे यह भी समझते हैं कि उनसे क्या पूछा जा रहा है और यह भी कि कैसे अपने अनुभवों को अपनी प्रतिक्रिया में दर्शाएँ (Clark, 2004)। विभिन्न बच्चे, उम्र, अनुभवहीनता,

भाषा की क्षमता, ध्यान देने की अवधि के अनुसार बातचीत के विभिन्न रूपों को बढ़ावा देंगे। हालाँकि यह जरूरी है कि उन भिन्नताओं को बहुत बारीकी तौर पर पूर्व-परिभाषित न किया जाए बल्कि प्रत्येक बच्चे या बच्चों के समूह को इस तरह समझने की ज़रूरत है कि वे एक अपरिचित स्थिति पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं। अतः एक बहुत मुखर बच्चा एकदम शान्त या तनावग्रस्त हो सकता है और एक गम्भीर बच्चा मजाकिया हो सकता है ।

प्रत्येक व्यक्ति को उसकी व्यक्तिगत स्थिति के हिसाब से प्रतिक्रिया देना, शोधकर्ता को विभिन्न व्यवहारों के प्रति संवेदनशील और उचित रूप से प्रतिक्रिया देने योग्य बनाता है (Westcott & Littleton, 2005, पृ. 147)। उदाहरण के तौर पर, चौथी और आठवीं कक्षा के बच्चों के फोकस समूह (focus group) के साथ प्रश्न करते हुए हमने पाया कि जिन प्रतिभागियों की मुख्य/प्रथम भाषा अँग्रेज़ी नहीं थी, वे समूह में जोर से बात करने में झिझक रहे थे। उनकी चुप्पी का अर्थ या तो शर्म या फिर सवाल को समझने की अक्षमता लगाया जा सकता था। जब हमने लिखित रुप से सभी से एक जैसे प्रश्न पूछे तो यह पाया कि वे बच्चे भी हमारे प्रश्नों को समझ गए थे और लिखित रूप से जवाब देने में सक्षम थे। हम अगर केवल यही मानते कि यह बच्चे हमारे प्रश्नों को समझ नहीं सकते तो हम उन्हें जवाब देने के वैकल्पिक तरीके प्रदान ही नहीं करते।

अक्षमता के बारे में अवधारणा बनाने की बजाय हमें साक्षात्कार में शामिल बच्चे की गतिविधि और प्रतिक्रियाओं के बारे में हमारी समझ विकसित करने की आवश्यकता है। हमें यह भी समझने की आवश्यकता है कि जिन स्थितियों में बच्चों को रखा गया है और वे साक्षात्कारकर्ता के प्रश्न का जो अर्थ लगाते हैं उससे उनकी गतिविधि तथा प्रदर्शन को बढ़ावा मिलता है या फिर उसमें बाधा आती है। हमें यह भी समझना चाहिए कि 'दक्षता' की मान्यताएँ समस्यात्मक हैं और सांस्कृतिक मान्यताओं द्वारा प्रेरित की जाती हैं। ये मान्यताएँ विशेष सामाजिक, संस्थागत और सांस्कृतिक सन्दर्भों में प्रतिभागियों द्वारा समझी और तय की जाती हैं (Westcott & Littleton, 2005, पृ.146)।

इसके लिए बच्चे पर अर्थ निर्माण करने वाले सक्रिय एजेंट के रूप में ध्यान देने की आवश्यकता है, यह खासतौर पर उन शोधकर्ताओं के लिए चुनौतीपूर्ण है जो बच्चों और युवाओं जैसी सांस्कृतिक तथा सामाजिक स्थिति में नहीं रहते। चित्र 6.2 में बच्चों और युवाओं के अच्छे साक्षात्कारकर्ता की विशेषताओं का सारांश दिया गया है।

1. युवाओं के साथ तालमेल विकसित करता है।

2. युवाओं के साथ समानुभूति दर्शाता है।

3. एक चिन्तित, शर्मीले और विरोधी स्वभाव वाले युवा को शान्त करता है।

4. साक्षात्कार के दौरान युवाओं को उनके प्रश्न और चिन्ताओं को पूछने के मौके प्रदान करता है और उन्हें जवाब देता है ।

5. साक्षात्कार में दिशा-निर्देशों और कार्यनीतियों को निर्धारित करने में युवाओं को शामिल करता है।

6. साक्षात्कार के उद्‌देश्य को स्पष्ट रूप से बताता है।

7. उपयुक्त भाषा और वाक्य संरचना का उपयोग करता है।

8. युवाओं को उनकी कहानी बताने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए खुले और अनुवर्ती (follow up) प्रश्न पूछता है।

9. जब कोई युवा एक प्रश्न पर अटक जाता है या मसखरी भरे तरीके से जवाब देता है तब साक्षात्कारकर्ता उसका रुख वापस साक्षात्कार की तरफ मोड़ता है।

चित्र 6.2 बच्चों और युवाओं के अच्छे साक्षात्कारकर्ता की विशेषताएँ

साक्षात्कार के प्रश्न और प्रोटोकॉल (आचार संहिता) विकसित करना

प्रश्न और उत्तर संचार के रूप हैं जिनमें दो प्राथमिक विशेषताएँ शामिल हैं : "वे दोनों *सूचनात्मक* और *सम्बन्धपरक* इरादों को शामिल करते हैं" (Tammivara & Enright, 1986, पृ. 219, मूल प्रति में चिह्नांकित)। सूचनात्मक का तात्पर्य उस से है जिसका संचार किया जा रहा है और सम्बन्धपरक का तात्पर्य है कि सूचना को अन्तःक्रिया के सम्बन्धपरक सन्दर्भ में कैसे समझा जाए। लेकिन ये दोनों ही पहलू अकेले सफल नहीं हैं। अध्याय 4 में पहले से चर्चा की गई सम्बन्धात्मक चुनौतियों के अलावा, विभिन्न प्रश्न बातचीत को विभिन्न तरीकों से आकार देंगे। लोरी (1975) के काम से निष्कर्ष निकालते हुए, तामिवारा और एनराइट, प्रश्नों के विकास के लिए चार आयामों का सुझाव देते हैं : प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, अमूर्त-मूर्त , वैयक्तिक-अवैयक्तिक, और भावनाओं से जुड़ा हुआ-कम प्रभावशाली (पृ. 222)।

हालाँकि लोरी ने शिक्षण के बारे में अध्यापकों के लक्ष्यों और नजरियों का अध्ययन किया, फिर भी प्रश्नों की प्रकृति और डाटा के प्रकटीकरण से उनके सम्बन्ध के बारे में उनके विचार

सामान्यतः अधिक प्रासंगिक हैं। लोरी ने शिक्षकों के अनुभवों का सार समझने के लिए निम्नलिखित तीन प्रकार के प्रश्नों और उनकी उपयोगिताओं पर चर्चा की है : (1) प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत (2) अप्रत्यक्ष और मूर्त (3) अप्रत्यक्ष, व्यक्तिगत, मूर्त और भावनाओं से जुड़ा हुआ (cathected), जिसे वे सबसे अधिक जरूरी समझते थे। चौथी और आठवीं कक्षा के छात्रों के साथ हमारे काम में, प्रत्यक्ष और व्यक्तिगत प्रश्न का एक उदाहरण हो सकता है- "जब आप राज्य स्तर की परीक्षा देते हुए बैचैन महसूस करते हैं तो क्या करते हैं? आपने यह कैसे सीखा?" एक अप्रत्यक्ष मूर्त सवाल यह भी हो सकता है- "आपके शिक्षक आपको यह कैसे बताते हैं कि ELA [English Language Arts Test] परीक्षा के दौरान वह आपसे क्या उम्मीद रखते हैं?" अप्रत्यक्ष, व्यक्तिगत, मूर्त और भाव विरेचक (cathected) सवाल यह हो सकते हैं- "आप क्या सोचते हैं कि जो विद्यार्थी राज्य की परीक्षाएँ पास नहीं करते उनका क्या होता है? आपको क्या लगता है कि उनकी असफलता के लिए कौन जिम्मेदार है?" एक से अधिक प्रकार के प्रश्न होने से बच्चों को अपने अनुभवों और वे उनके क्या अर्थ लगाते हैं यह बताने के कई अवसर मिलते हैं।

एक सामाजिक रचनात्मक साक्षात्कार में शोधकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह एक गैर-आलोचनात्मक प्रतिक्रिया तैयार करे और उसे बनाए रखे। कुछ प्रतिक्रियाओं (जैसे अपशब्दों या जातिवादी टिप्पणियों का उपयोग) के प्रति नापसन्दगी या असहजता जाहिर करना या तो साक्षात्कार का अन्त कर देगा या फिर वह एक खास किस्म की नैतिकता से प्रेरित युवा-अनुभव की कहानी का सह-निर्माण करेगा। हमने इसकी एक थोड़ी अलग अभिव्यक्ति का अनुभव किया जब शहर के भीतरी भाग से आए (inner-city) किशोरों के एक समूह को साक्षात्कार के दौरान स्कूल के बाद का कार्यक्रम चलाने वाले एक कर्मचारी ने बाधित किया जिसमें वे युवा भाग ले रहे थे। कार्यक्रम चलाने वाले कर्मचारी हमें उनकी उपस्थिति के बिना युवाओं का साक्षात्कार करने की अनुमति देने के लिए अनिच्छुक थे क्योंकि उन्हें लगता था कि हम उस परिस्थिति से निपट नहीं पाएँगे जो साक्षात्कार के दौरान पैदा हो सकती है। साक्षात्कार के दौरान बहुत से युवाओं ने उनकी लम्बे समय से चली आ रही कुछ व्यक्तिगत असहमतियाँ जताईं जिसके परिणामस्वरूप उनका चिल्लाना और आक्रामक तेवर भी दिखे। साक्षात्कर्ताओं के तौर पर, युवाओं के बीच सम्बन्धों को समझने से यह पता लगा कि वे इस कार्यक्रम में स्वयं को कहाँ पाते हैं। लेकिन शोर-शराबे वाली बातचीत के कारण, कार्यक्रम के कर्मचारियों ने इसमें दखलअन्दाजी कर इसे रोक दिया। हमारी गैर आलोचनात्मक प्रतिक्रिया ने

युवाओं के साथ हमारी विश्वसनीयता बढ़ा दी परन्तु कार्यक्रम के कर्मचारियों के साथ हमारी विश्वसनीयता कम हो गई।

ऐसे साक्षात्कार प्रोटोकॉल (आचार संहिता) विकसित करना जो या तो बहुत व्यापक या बहुत ही गूढ हों यह एक आम गल्ती है। उदाहरण के लिए, कोई पूछ सकता है "आपको सीखने के लिए क्या प्रेरित करता है?" या, "आप अपने दोस्तों के बीच अपनी भूमिका कैसी देखते हैं?" ऐसे सवाल कई तरह के अन्य सवाल उठाते हैं– जैसे प्रेरणा क्या है? भूमिका क्या होती है? यह कैसे होते हैं और वास्तव में आप इन संकल्पनाओं के विषय में क्या समझने का प्रयास कर रहे हैं? उदाहरण के लिए, भूमिका को किसी विशेष सन्दर्भ में किसी व्यक्ति की उपस्थिति के प्रभाव के तौर पर समझा जा सकता है। वैकल्पिक प्रश्न यह भी हो सकते हैं– "यदि आपको अचानक एक महीने तक अपने चाचा के साथ रहने जाना पड़े तो आपके दोस्त आपकी कौन सी बातों को सबसे ज़्यादा याद करेंगे? आपकी कमी को भरने के लिए उन्हें क्या करना पड़ेगा? सबसे अधिक कौन प्रभावित होगा? क्यों? कैसे?"

शोध के सन्दर्भ में, अधिक से अधिक यह समझना कि भूमिका या प्रेरणा का क्या औचित्य है काफी मददगार साबित हो सकता है। इससे शोधकर्ता को दूसरों के साथ समानुभूति करने में मदद मिलती है और वह इस प्रकार के प्रश्न पूछ पाता है जो उनके अनुभवों के बारे में गहरे विवरण निकलवा सकें। बच्चों के साथ यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से शब्द जिन्हें हम बिना प्रमाण के सही मान लेते हैं, गूढ़ होते हैं, इसलिए गूढ़ चीजों को बच्चों के रोजाना के अनुभवों से जोड़कर उन पर संक्षेप में पुनर्विचार कर लेना आवश्यक है। खुले प्रश्न लगभग हमेशा बेहतर होते हैं। 'यदि सवाल खुले होते हैं तो बच्चों को उन विषयों और संवाद के तरीकों को लाने का अधिक अवसर मिलेगा, जिनसे वे परिचित हैं। साथ ही गैर निर्देशित प्रश्न समूह साक्षात्कार के दौरान बच्चों को दूसरों के साथ अपने जवाब जोड़ने और उनके उत्तर का विस्तार करने के अधिक अवसर प्रदान करते हैं' (Eder and Fingerson, 2003, पृ. 36)।

प्रश्नों के प्रकार की तुलना में, शायद, साक्षात्कार की संरचना अधिक महत्त्वपूर्ण है। आमतौर पर साक्षात्कार अनजान लोगों के बीच की बातचीत होती है। वातावरण (setting) पर ध्यान देना, प्रारम्भिक अभिवादन, शुरुआती गतिविधि, बाद की गतिविधियाँ और अन्तिम टिप्पणियाँ

ये सभी एक सफल साक्षात्कार के आवश्यक घटक हैं। यदि प्रतिभागी बच्चे तुरन्त स्वयं को आमंत्रित महसूस नहीं करते तो वे साक्षात्कार छोड़कर जाने के लिए कह सकते हैं। सन्दर्भ पर विचार करने की आवश्यकता है। साक्षात्कार के लिए चुनी गई जगह कितनी आरामदायक और स्वागतमय है? आप और आपके साक्षात्कार के प्रतिभागी कहाँ-कहाँ और कैसे बैठेंगे? एक अनौपचारिक एवं अनुकूल जगह ढूँढिए या फिर एक औपचारिक जगह को कुछ सामग्री (जैसे गोल तकिया, रुई के खिलौने, रंगीन कलमें, कागज इत्यादि) और बराबर आकार की कुर्सियाँ लाकर, कालीन बिछाकर और आकर्षक बनाएँ। दिन के किसी ऐसे समय को तय करें जिससे बच्चों की दिनचर्या में खलल न पड़े जैसे कि, यह कार्यक्रम उनके पसन्दीदा टीवी कार्यक्रम के समय पर न हो। संकोच दूर करने वाली या शुरुआती तनाव कम करने की गतिविधियाँ (आइस-ब्रेकिंग या वार्म-अप गतिविधियाँ) इस्तेमाल करने के महत्त्व पर विचार करें।

साक्षात्कार अकसर खुले प्रश्नों से शुरू होते हैं ताकि काम से जुड़े प्रश्न पूछने से पहले बच्चा साक्षात्कारकर्ता के साथ सहज महसूस कर सके। हालाँकि बच्चों (खासकर छोटे बच्चों) के साथ सवाल पूछने से पहले उनका ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। इसके तहत आइस-ब्रेकर्स (शुरुआती गतिविधियाँ) अच्छा माहौल बनाती हैं। यदि यह व्यक्तिगत साक्षात्कार है, तो चित्रण करने वाले खेल जैसे विनिकोट (Winnicot, 1971) का स्क्विगल (टेढ़ी- मेढ़ी रेखाएँ बनाना) वाला खेल बहुत काम आता है। साक्षात्कारकर्ता एक कागज के टुकड़े पर स्क्विगल (टेढ़ी- मेढ़ी रेखाएँ) बनाता है और बच्चे को इसे किसी चीज में बदलने को कहता है। जब यह हो जाता है तो बच्चा साक्षात्कारकर्ता के लिए टेढ़ी- मेढ़ी रेखाएँ (squiggle) बनाता है और उसे किसी चीज में बदलने को कहता है। समूह में आइस-ब्रेकर गतिविधि का चयन समूह के सदस्यों को आपस में एक दूसरे को जानने और नजदीकियाँ बढ़ाने में मदद करने वाला होना चाहिए।

कुछ खेल जैसे जन्म के महीने के अनुसार क्रम में लगना, एक गेंद आगे फेंकना और अपना नाम बोलना या कोई पसन्दीदा गतिविधि या संगीत समूह बनाना; एक विस्तृत आयु वर्ग के बच्चों के साथ अच्छा काम करते हैं। आइस-ब्रेकर के अलावा दृश्यों तथा बातचीत सहज करने की अन्य तकनीकों का प्रयोग प्रतिक्रिया उत्पन्न करने की महत्त्वपूर्ण युक्तियाँ हो सकती हैं। 'छोटे बच्चों को अकसर किसी चीज के साथ कुछ करना और उसके बारे में बातचीत करना अधिक आसान, अधिक सहज और रुचिपूर्ण लगता है, बजाय इसके कि जो मौजूद नहीं है उसके बारे में बात करना' (Tammivara & Enright, 1986, पृ. 232)। 'केवल विमर्श की प्रक्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित करने से एक अहम भाव जिससे अर्थ बनाया जाता है नजरअन्दाज होता

है... वह है, उपकरणों और कलाकृतियों के साथ हमारा जुड़ाव और उपयोग। सारिणी 6.3 बच्चों और युवाओं के साथ सफल साक्षात्कार के उपाय सुझाती है।

साक्षात्कार से पूर्व
1. शर्मीले और झिझकने वाले प्रतिभागियों के लिए सहायक गतिविधियों के साथ पूरा प्रोटोकॉल तैयार करना।
2. बच्चों को व्यस्त करने के लिए वैकल्पिक गतिविधियाँ जैसे– चित्र बनाना, लिखना, एक लिखित या मौखिक डायरी रखना, तस्वीरें लेना या वीडियो क्लिप इस्तेमाल करना, चित्र, परिदृश्यों, मानचित्रों या अन्य जवाब देने के लिए प्रेरित करने वाली सहायक सामग्रियों और युक्तियों पर विचार करें।
3. बच्चों के साथ चित्र बनाने वाली तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों की योजना बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि आप भविष्य में इन उत्पादों का क्या करेंगे। गहरे रंग की कलमें और ऐसे आकार के कागजों का इस्तेमाल करें जो आसानी से प्रबन्ध करने योग्य हों ।
4. जिस कमरे में साक्षात्कार होना है उसका निरीक्षण कर लें।
5. बच्चों के आने से पहले रिकॉर्डिंग के उपकरण तैयार रखें।
साक्षात्कार के दौरान
1. बच्चों को उनके नाम से पुकारें।
2. बच्चों को साक्षात्कार के उद्देश्य के बारे में याद दिलाएँ और उन्हें उसकी संरचना से अवगत कराएँ।
3. खुले सवाल पूछें।
4. सवालों और निर्देश देने के लिए आसानी से समझ आने वाली, सुस्पष्ट भाषा का प्रयोग करें।
5. जब भी सम्भव हो बच्चों को साक्षात्कार की प्रक्रिया का नेतृत्व करने दें।
6. समानुभूति को सच्चे ढंग से व्यक्त करें।
7. बच्चों का आदर करें परन्तु याद रखें कि बच्चों और किशोरों के व्यवहार का पूर्व अनुमान नहीं लगाया जा सकता।
8. रिकॉर्डर को सीधे मेज पर रखने की बजाय एक कॉपी पर रखें।
9. यदि आप नाश्ता दें, तो शोर करने वाले पैकेट का इस्तेमाल न करें।
साक्षात्कार के बाद

1. उपनाम (pseudonyms) नियत करें और सभी टेप, चित्रों और अन्य सामग्रियों पर लेबल लगाएँ।
2. साक्षात्कार को तुरन्त ही प्रतिलिपित कर लें और साक्षात्कार के बारे में महत्त्वपूर्ण सूचना जैसे कि-बच्चों और शोधकर्ता का नजरिया, व्यवहार, ग्रहणशीलता और अन्य आवश्यक जानकारी जैसे कि अवरोधों को भी लिख लें।
3. अगर जरूरी हो तो प्रोटोकॉल का संशोधन कर लें।

मौखिक प्रतिक्रियाओं को जानने की युक्तियाँ

बच्चों के साथ साक्षात्कार तभी सबसे अच्छा काम करता है जब वह अनेक गतिविधियों के इर्द-गिर्द संरचित हों (Graue and Walsh, 1998; Mauthner, 1997)। यह एकरसता को तोड़ता है और बच्चों को व्यस्त रहने में मदद करता है। हर गतिविधि एक नया केन्द्र बिन्दु दर्शा सकती है या एक जैसे सवालों को पूछने का एक अलग तरीका हो सकती है। जवाब देने के लिए कुछ विशिष्ट होना छोटे बच्चों का जाँच के विषय से जुड़ाव बनाने में मदद करता है।

> उदाहरण के तौर पर एक कक्षा में ली गई बच्चों की तस्वीरें उनकी कक्षा में होने वाली सामाजिक सहभागिता के बारे में उनकी समझ को समझने में महत्त्वपूर्ण हो सकती हैं। हम तस्वीरों को एक मेज पर इकट्ठा कर सकते हैं और फिर उसमें से मैरी की तस्वीर उठाकर पूछ सकते हैं कि "यदि मैरी कला वाली मेज पर काम कर रही हो तो और कौन-कौन से बच्चे उसके साथ काम करेंगे?" (Graue and Walsh, 1998, पृ. 114-115)।

बच्चों का साक्षात्कार लेते समय प्रेरित करने वाली सामग्री का इस्तेमाल करना कुछ नई बात नहीं है। बच्चों के साथ काम करने वाले थेरेपिस्ट और चिकित्सक इनका सालों से इस्तेमाल कर रहें हैं। बच्चों के सन्देहित उत्पीड़न के बारे में जानकारी निकलवाने के लिए गुड़ियाओं, खिलौनों और कठपुतलियों का इस्तेमाल किया जाता रहा है ताकिबच्चे अपनी भावनाओं को जाहिर कर सकें या फिर उसके बारे में कहानी सुना पाएँ (Brooker, 2001)। हाल ही में, शोधकर्ता जानकारी निकलवाने की ऐसी सामग्रियों को सामने लाए हैं जिनके माध्यम से बच्चे और युवा अपने रोजमर्रा के अनुभवों को साझा कर पा रहे हैं।

बच्चों के जीवन्त अनुभवों को पकड़ पाने के तरीकों को ढूँढने के लिए शोधकर्ताओं ने बच्चों को बहुत तरीकों से आमंत्रित किया है, जिसमें शामिल हैं-

- अस्थमा के साथ कैसे जिया जाता है, ऐसी स्थितियों का अभिनय (role play) करना (M. Morgan et al., 2002)
- जिन्दगी के वास्तविक मुद्दों में से चुनकर कुछ नाटकीय दृश्यों का निर्माण और अभिनय करना (Veale, 2005)
- टीवी कार्यक्रमों में से छोटे विडियो क्लिप्स को देखना और उन पर प्रतिक्रिया देना। यह चर्चा "युवाओं को अपनी परेशानियों से जूझने में और उनकी परेशानियों पर वयस्कों की प्रतिक्रिया को वे कैसे लेते हैं इसे आगे बढ़ाने में एक स्प्रिंगबोर्ड के रूप में काम करती है" (Punch, 2002a, पृ.51)।
- उनके स्कूल के भीतर के हिस्सों के खाकों को पिछले सालों में हुई हिंसात्मक घटनाओं को पहचानने के लिए इस्तेमाल करना और फिर इसको साथियों के साथ आगे की चर्चा का आधार बनाना (Astor, Meyer & Behre, 1999)
- एक 'छोटा (जेब में रखा जाने वाला) निर्णय सम्बन्धी' चार्ट भरना जो कि यह दर्शाए कि उन्होंने अपनी जिन्दगी में क्या महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए तथा उन्हें किन लोगों ने सहयोग दिया (Thomas & O' Kane, 1998)।

हमने साक्षात्कार के प्रश्नों को ऐसे वाक्यों की शुरुआत की तरह रखा जिनको बच्चे एक टोपी से अचानक से चुनेंगे, जोर से पढ़ेंगे और फिर उसे पूरा करेंगे। हमने इसे 'ईमानदारी का खेल' नाम दिया क्योंकि हमने बच्चों को बताया कि हमारी इच्छा है कि वे प्रश्नों का ज़्यादा से ज्यादा ईमानदारी से जवाब दें। हालाँकि इस खेल ने किसी खुले[1] प्रश्न जैसी ही भूमिका निभाई, परन्तु किसी टोपी से एक प्रश्न उठाना और उसे हाथ में पकड़ना इसने बच्चों को जवाब देने के लिए प्रेरित किया जबकि हो सकता था कि वे मौखिक प्रश्नों का जवाब ही ना देते। इस तरीके से बच्चों को प्रश्न याद करने की जरूरत नहीं पड़ी और उन्होने टेप रिकॉर्डर में बोलने तथा उसे एक दूसरे को देने का आनन्द उठाया। जब हमने पहली बार इस युक्ति का प्रयोग किया तो विद्यार्थियों ने सुझाया कि हर वाक्य की शुरुआत को एक से अधिक विद्यार्थी पूरा कर सके। हमने तुरन्त ही इस युक्ति को शामिल कर लिया क्योंकि इससे बच्चों को साक्षात्कार की स्थिति

---

[1] ओपेन एंडेड प्रश्न ऐसा प्रश्न होता है जिसका जवाब 'हाँ' या 'नहीं' में नहीं दिया जा सकता। ओपेन एंडेड प्रश्न एक कथन के रूप में दिए जाते हैं और उत्तर देने वाले को इन पर अपनी प्रतिक्रिया देनी होती है। उत्तरदाता इनके उत्तर अपने सम्पूर्ण ज्ञान, भावना और समझ के आधार पर दे सकते हैं।

में एक अहम भूमिका निभाने में मदद मिली और इससे हमें परिपूर्ण और जटिल डाटा भी प्राप्त हुए। जब भी मौका मिला, हमने इस चर्चा को दूसरे विषयों को गहराई से समझने के लिए भी इस्तेमाल किया, जैसे कि नीचे लिखे उदाहरण में चौथी कक्षा में पढ़ने वाले शहरी विद्यार्थियों के सामूहिक साक्षात्कार का विवरण दिया गया है :

जेक: *जो बच्चे ELA में फेल हो गए...* उन्हें वही कक्षा दुहरानी पड़ेगी।

ट्रेसी: *जो बच्चे ELA में फेल हो गए...* उन्होंने ध्यान नहीं दिया और उन्हें जो करना था वह उन्होंने नहीं किया।

दाफने - *जो बच्चे ELA में फ़ेल हो गए...* उन्होंने शिक्षकों द्वारा सिखाई गई तरकीबो के बारे में नहीं सोचा।

शोधकर्ता : क्या आप कोई ऐसी तरकीब सोच सकते हैं? [बच्चों ने हमें तरकीबों की धारणा से परिचित कराया– उन तरकीबों से भी जो प्रश्नपत्र बनाने वाले उन्हे फँसाने के लिए इस्तेमाल करते हैं और उनसे भी जिनका इस्तेमाल वे परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए करते हैं।]

दाफने : तुम्हें प्रश्नों को बहुत ध्यान से पढ़ना होगा ।

एलेक्स : अगर तुम्हें कोई ऐसा उत्तर दिखे जो तुम्हारे हिसाब से सही हो तो भी सभी उत्तरों को दोबारा पढ़ो।

फेथ : प्रश्न का जवाब बहुत ध्यान से दो।

उद्दीपन पैदा करने की पद्धतियाँ

चित्रों का प्रयोग लम्बे समय से चिकित्सीय परामर्श और कला चिकित्सा में प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने के लिए किया जाता रहा है। प्रसिद्ध रॉर्शाक इंकबाल्ट परीक्षण इस धारणा पर आधारित है कि लोगों द्वारा अचानक से बनाए गए असंयोजित सम्बन्ध (free associations) उनकी भावनात्मक या अवचेतन दुनिया में एक रास्ता खोल सकते हैं। 'उद्दीपन परीक्षा' 'Stimulus test' के नाम से जाने वाले ये परीक्षण, उद्दीपन (stimulus) तथा प्रतिक्रिया के संयोजन के रूप में उभरे जिससे थेरेपिस्ट तथा रोगी के बीच अधिक प्रतिक्रिया लेने और देने वाला वाला आदान-प्रदान होता है, खासकर छोटे बच्चों के साथ काम करते समय। उदाहरण के लिए 'कहानी चित्रित करें' परीक्षण 14 उद्दीपन कार्डों के साथ शुरू होता है जो कि विभिन्न स्थितियों को दर्शाते हैं। बच्चे को कोई दो तस्वीरें चुनने को कहा जाता है और फिर इन दो तस्वीरों से सम्बन्धित विषयों पर कोई कहानी चित्रित करने तथा सुनाने को कहा जाता है। इसके बाद इन प्रतिक्रियाओं के भावनात्मक विषय का मूल्यांकन एक पूर्व निर्धारित स्केल के द्वारा किया जाता

है। 'उद्दीपन (stimulus) ड्राइंग पद्धति में चित्रकारिता विचारों को प्राप्त करने और व्यक्त करने के एक प्रमुख माध्यम के रूप में शब्दों की जगह ले लेती है (Silver, 2001, पृ. 16)।

जैसा कि अध्याय 7 में चर्चा की गई है, सामाजिक विज्ञान शोध में चित्रों के उपयोग में अधिकतर प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए चित्र शामिल होते हैं। हालाँकि बच्चों के साथ काम करते समय सिल्वर (2001) जैसी उद्दीपन विधियाँ आज भी काफी इस्तेमाल होती हैं, खासकर मनोविज्ञान और सामाजिक कार्य के क्षेत्र में। उन पद्धतियों का इस किताब में ज्यादा समर्थन नहीं किया गया है।

एक सामाजिक रचनात्मक पद्धति चित्रों/छवियों को एक दृश्य संसाधन के रूप में देखती है जो रुचि के विषय पर समझ और अर्थ के सहनिर्माण में मदद करते हैं। जब शोधकर्ता उपलब्ध विकल्पों पर विचार करते हैं तो बच्चों के भावनात्मक और संज्ञानात्मक जीवन को समझने के लिए उन्हें चित्रों का प्रयोग करते हुए देखना असामान्य नहीं है। बच्चों के अनुभवों या कुछ लोगों और गतिविधियों से उनके सम्बन्धों को समझने के लिए उद्दीपन छँटनी कार्य, विशिष्ट घटनाओं की जानकारी के लिए लिखित कार्य या खुले साक्षात्कार प्रश्नों का प्रयोग करना भी असामान्य नहीं है।

फोटोएलिसिटेशन (Photoelicitation) साक्षात्कार

तस्वीरों का प्रयोग जवाब प्राप्त करने (Elicitation) की एक युक्ति है। फोटोएलिसिटेशन केवल अधिक जानकारी प्राप्त करने का तरीका नहीं है बल्कि "यह अलग तरीके की जानकारी को प्राप्त करने की कोशिश करता है।" (Harper, 2002, पृ.13) अमरीकी फोटोग्राफर जॉन कोलियर, Jr. (John Collier, Jr. 1913-1992) ने 1950 में कनाडा के परिवर्तित हो रहे समुदायों के मानसिक स्वास्थ्य की जाँच में कॉर्नेल युनिवर्सिटी की शोध टीम के सदस्य के रूप में साक्षात्कार के लिए फोटोग्राफ्स/चित्रों का प्रयोग किया। कोलियर (Collier, 1957) ने पाया कि चित्रों की भाषा (graphic imagery) का "गुप्त स्मृति को जगाने, सूचनादाता के जीवन से जुड़ी भावनात्मक बातों को प्रेरित करने और बाहर निकाल पाने की इसकी क्षमता" के कारण सूचनादाता पर एक गहरा प्रभाव पड़ा (पृ. 858)।

बच्चों के साथ साक्षात्कार में चित्रों का प्रयोग उनके साथ तालमेल बनाने तथा व्यस्कों के साथ वार्तालाप के विषय में उनके पूर्व-निर्धारित विचारों को तोड़ने में सहायक होता है (Cappello, 2005; Dempsey & Tucker, 1994; Mauthner, 1997) या फिर कोलियर (Collier, 1957) के शब्दों में "एक सोच-समझकर उत्तर देनेवाली तनावपूर्ण संरचना को तोड़ देना" (पृ. 854)। फोटोएलिसीटेशन बच्चों के साथ काफी प्रभावशाली होता है और इसे विभिन्न सन्दर्भों में और विभिन्न कारणों से इस्तेमाल किया जाता रहा है, जैसे-अलग-अलग पेशों के बारे में 5 से 13 साल के बच्चों के दृष्टिकोण और धारणाओं का पता लगाना (Weiniger, 1998); विकलांगता के बारे में उनके विचार (Diamond, 1996); तीसरी, छठी तथा नौंवी कक्षा के छात्रों की एतिहासिक सोच में अन्तर (Foster, Hoge & Rosch, 1999); और 14 से 18 साल की महिला खिलाड़ियों की स्वयं के शरीर के बारे में अवधारणा पर पत्रिका में पाई जाने वाली सुन्दरता को दर्शाने वाली तस्वीरों का प्रभाव (Hurworth, Clark, Martin & Thomsen, 2005)।

फोटोएलिसिटेशन का इस्तेमाल करने के लिए शोध के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए छवियों का चुनाव, प्रतिभागियों के लिए इसकी प्रासंगिकता या महत्त्व का कुछ अन्दाजा तथा एक बड़े शोध की रूपरेखा के भीतर इसके उद्देश्य की समझ आवश्यक है (जैसे शोधकर्ता द्वारा चुने गए सम्भावित रूप से महत्त्वपूर्ण विषयों का विस्तार करना, नए साक्षात्कार की शुरुआत में प्रतिभागियों के विचारों को जानना और उनके साथ तालमेल बैठाना, प्रतिभागियों के साथ साझा की गई छवि से सम्बन्धित विषय के बारे में समूह की प्रतिक्रिया प्राप्त करन)। दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया के एक शहरी प्राथमिक स्कूल के बच्चों की लेखन प्रक्रियाओं की जाँच करते हुए कैपेलो (2005) ने 6 से 9 वर्षीय बच्चों के साथ व्यक्तिगत फोटोएलिसिटेशन साक्षात्कार किया। उन्होंने बच्चों का उनकी कक्षा में कई महीने तक अवलोकन किया। उनके साथ औपचारिक और अनौपचारिक साक्षात्कार किए और उन्हें कैमरे द्वारा उन तस्वीरों को लेने को कहा जिसे वे 'महत्त्वपूर्ण लेख' समझते थे। वे जब भी चाहे इस कैमरे को बन्द कर सकते थे।

उन्हें इस बात में दिलचस्पी थी कि कैसे लेखन बच्चों की सामाजिक पहचान को आकार देने में भूमिका निभाता है और बच्चे अपने लेखन के बारे में किस प्रकार के निर्णय लेते हैं। प्रत्येक फोटो आधारित साक्षात्कार की तैयारी करते समय उन्होंने उस बच्चे तथा उसकी तस्वीरों पर ध्यान केन्द्रित किया।

> उपकरण समूह की तस्वीरों में कक्षा में लेखन के विभिन्न चरणों में शामिल प्रतिभागियों की समानताएँ शामिल थीं। तस्वीरों को एक बड़े जिल्द में इकट्ठा किया गया था और उन्हें स्पष्ट आवरण से सुरक्षित किया गया था ताकि बच्चे उन्हें आसानी से हटा सकें और व्यवस्थित कर सकें। उपकरण समूह में 4*6 आकार की लगभग सौ छवियाँ (तस्वीरें) शामिल थीं। सभी को साक्षात्कार के बाद आसानी से भरने के लिए (refilling) अंकित और कूटबद्ध किया गया था। तस्वीरों (फोटोग्राफ्स) पर कोई शीर्षक नहीं दिया गया था पर जिल्द को तीन स्पष्ट भागों में बाँटा गया था : काम करते हुए बच्चे, सार्वजनिक प्रदर्शन, और सूचनादाता द्वारा बनाई गई छवियाँ (Cappello, 2005, पृ.174)।

इस उदाहरण में छात्रों ने साक्षात्कार से पहले अपनी खींची हुई तस्वीरें नहीं देखी थीं और ना ही उन्होंने चयन प्रक्रिया में भाग लिया था। इसके बजाय कैपेलो ने प्रत्येक साक्षात्कार को छात्रों द्वारा ली गई तस्वीरों के महत्त्व पर जोर डालते हुए शुरू किया व इसको महत्त्वपूर्ण तस्वीरों को महत्त्वहीन तस्वीरों से अलग करने और उनके बारे में बातचीत करने का आधार बनाया।

शोधकर्ताओं ने बच्चों के साथ अपने काम में विभिन्न तरीकों से छवियों का इस्तेमाल किया है, परन्तु केवल हाल ही में यह ध्यान दिया गया है कि बच्चे और युवा व्यक्ति एक विशेष बातचीत के दौरान इसे संवाद के माध्यम तथा अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं, ना कि केवल विकास या पहचान के 'वस्तुनिष्ठ' पहलू को दर्शाने के लिए। अध्याय 7 में हम जानेंगे कि शोधकर्ता बच्चों के साथ शोध में कला और फोटोग्राफी का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं।

<u>व्यक्तिगत साक्षात्कार</u>

व्यक्तिगत साक्षात्कार व्यक्ति को प्राथमिकता देते हैं। इनकी खास बात यह है कि ये शोधकर्ता को प्रत्येक प्रतिभागी पर पूरा ध्यान देने का अवसर देते हैं। इनकी चुनौतीपूर्ण बात यह है कि ये शोधकर्ता और जिन पर शोध हुआ है उनके सम्बन्धों को पहले चर्चा किए गए तरीकों से बढ़ावा देते हैं। हालाँकि कई शोधकर्ताओं ने इस चुनौती के साथ काम किया है, जैसे– कमरे को रुचिपूर्ण ढंग से सजाने पर बारीकी से ध्यान देकर, बच्चे को तुरन्त ही मजेदार गतिविधि तथा भयरहित वातावरण में शामिल करके और एक सफल बातचीत की ओर सकारात्मक तरीके से बढ़कर।

व्यक्तिगत साक्षात्कार को संवेदनशील तथा निजी मामलों को समझने के लिए उचित समझा जाता है या फिर किसी अनुभव या मुद्दे को गहराई में जानना हो, या विषय कुछ ऐसा हो कि हर बच्चा शोध को कैसे समझता है या फिर वह सुझाई गई विषय-सामग्री के साथ कैसे सम्बन्ध स्थापित करता है। ऐसे अध्ययन जिन्होंने व्यक्तिगत साक्षात्कारों का प्रयोग उपयोग किया है, उन्होंने 5 से 14 वर्ष के बच्चों के जीवन में सहायक और हानिकारक सम्बन्धों का पता लगाया है (Rogers et al., 2005); प्राथमिक कक्षा के छात्रों की कक्षा लेखन के बारे में धारणा के बारे में बताया है (Cappello, 2005) और 7 से 10 वर्ष के बच्चों के स्कूल में विकलांगता के बारे में विचार प्रस्तुत किए हैं (Holt, 2004)।

साक्षात्कार आधारित अध्ययन, अकसर बच्चों को साक्षात्कार में आमंत्रित करने से पहले और तरीके भी इस्तेमाल करते हैं, जैसे– प्रतिभागियों का अवलोकन ताकि वे जाँच के सन्दर्भ की पूरी तस्वीर पा सकें तथा बच्चों के साथ तालमेल बना सकें। वे अध्ययन जो केवल साक्षात्कार का उपयोग करते हैं, वे अनेक साक्षात्कार लेते हैं ताकि साक्षात्कारकर्ता और साक्षात्कार देने वाले के बीच सम्बन्ध विकसित होने के लिए समय मिल सके। रोजर्स व अन्य (Rogers et al., 2005) द्वारा अपने निजी और सामाजिक सम्बन्धों के बारे में बच्चों की समझ का अध्ययन एक ऐसी ही रिपोर्ट है। इस अध्ययन में तीन साल तक, हर साल दो या तीन साक्षात्कार लिए गए।

पहले साक्षात्कार में हमने कोई पहले से तय प्रोटोकॉल इस्तेमाल नहीं किया। हम चित्र बनाने की सामग्री, कार्ड्स, चुटकुले, कठपुतलियाँ आदि को लेकर स्वयं बच्चों से मिलने गए। सबसे पहले हम बच्चों से एक ऐसा रिश्ता बनाना चाहते थे ताकि बच्चे हम पर इतना विश्वास कर सकें कि वे अपने जीवन के बारे में कुछ वास्तविक बातें बताएँ। साक्षात्कारकर्ताओं ने बच्चों की कहानियों और खेल का अनुसरण किया ना कि कोई कार्यावली (agenda) तय की। दूसरे साक्षात्कार में हमने विकास सम्बन्धी सामग्री (कला की सामग्री और विशेष आयु के बच्चों के लिए बनाए गए खास सवाल) को इस्तेमाल किया ताकि पहले साक्षात्कार के आधार पर एक व्यक्तिगत रूप से उपयुक्त साक्षात्कार को तैयार किया जा सके (Rogers et al., 2005)।

साक्षात्कार जानकारी के संग्रह की एक लचीली विधि है जिससे 15 मिनट या एक घण्टे के समय में काफी कुछ हासिल हो पाता है। साक्षात्कार पर आधारित अध्ययनों की रूपरेखा तैयार करते समय शोधकर्ता को इस बात पर विचार करने की जरूरत होती है कि अध्ययन में कौन,

कब, कितनी बार, कितना अधिक, कितनी देर तक, कब, कहाँ और क्यों शामिल है। शोधकर्ता को जरूरत पड़ने पर इस रूपरेखा में बदलाव करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। कभी-कभी एक दोस्त या माता-पिता को साक्षात्कार में बैठने के लिए आमंत्रित किया जाता है। यह शोधकर्ता और प्रतिभागी में सत्ता की असमानता को कम करने का एक तरीका हो सकता है (Mayall, 2000)। या इसको ऐसे भी समझ सकते हैं कि अगर साक्षात्कार प्रतिभागी के घर में किया जा रहा है तब उनके माता-पिता की उपस्थिति का विकल्प उनको ना देना अनैतिक प्रतीत हो सकता है (Barker & Weller, 2003)। इन निर्णयों के अलग-अलग परिणाम हो सकते हैं, लेकिन उनमें से एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शोधकर्ता अब वैयक्तिक साक्षात्कार नहीं कर रहा है और डाटा के विश्लेषण में यह बात दिखनी चाहिए। उदाहरण के लिए जब बच्चे और अभिभावक का इकट्ठे साक्षात्कार होता है तो असहमतियाँ हो सकती हैं जिसमें बच्चे या अभिभावक एक दूसरे की बातों का खण्डन कर सकते हैं या सही कर सकते हैं। इससे बच्चों के दृष्टिकोण को समझना अधिक मुश्किल हो सकता है।

सामूहिक साक्षात्कार या फोकस समूह

सामूहिक साक्षात्कार जो कि एक सामान्य/आम (common) विषय पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, बच्चों को एक जैसी गतिविधियों में शामिल करते हैं या फिर ऐसे प्रतिभागियों को एक साथ लाते हैं जिनके समान अनुभव रहे हों या जो एक जैसी परिस्थितियों से गुजरे हों। ये सभी आयु वर्ग के बच्चों के लिए उचित होते हैं (Darbyshire, MacDougall, & Schiller, 2005; Hennessy & Heary, 2005; Mauthner, 2005; M. Morgan et al., 2002)।

हम फोकस समूह और सामूहिक साक्षात्कार में अन्तर नहीं करते हैं और दोनों शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर उपयोग करते हैं। हम 'फोकस समूह' शब्द का प्रयोग, डी. एल. मोर्गन (1997) की तरह, व्यापक रूप से करते हैं जिसका अर्थ है, "एक शोध तकनीक जो कि शोधकर्ता द्वारा तय विषय पर समूह में बातचीत द्वारा डाटा इकट्ठा करती है" (पृ. 6)। वास्तव में, समूह में काम कर पाने के गुण के कारण ही यह तकनीक बच्चों के साथ काम करने वाले शोधकर्ताओं में पसन्द की जाती है। फोकस समूह प्रत्येक बच्चे के निजी अनुभवों को गहराई से जानने के लिए अधिक अनुकूल नहीं होता परन्तु यह उनके अनुभवों को गहराई से समझने के अन्य अवसर प्रदान करता है। हालाँकि ये अनेक व्यक्तिगत साक्षात्कारों के लिए विकल्प

नहीं है क्योंकि सामूहिक वार्तालाप को जानकारी निकलवाने के महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में देखा जाता है। “बारी-बारी से प्रत्येक व्यक्ति से सवाल पूछने की बजाय फोकस समूह के शोधकर्ता प्रतिभागियों को एक दूसरे से बात करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जैसे कि– समूह में सवाल पूछना; किस्सों का आदान प्रदान करना और एक दूसरे के अनुभवों और विचारों पर टिप्पणी करना” (Kitzinger & Barbour, 1999, पृ.4)।

कुछ स्थितियों में समूह की गतिशीलता (dynamics) शोध का केन्द्र होती है। जब किसी बातचीत के दौरान बच्चे मिलते हैं तो आपस में बातचीत के दौरान वे सहमत या असहमत होते हैं, हँसते या परेशान होते हैं। इस प्रकार वे अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक दुनिया के साथ शामिल होते हैं। ऐसे अध्ययनों में जो किसी विशेष समूह की गतिशीलता पर केन्द्रित होते हैं– जैसे पारिवारिक या मित्रों के समूह, इनमें सामूहिक साक्षात्कार उपयोगी हो सकते हैं क्योंकि साक्षात्कार के दौरान समझौते, संवाद और नियंत्रण के सामान्य स्वरूप उभरने की सम्भावना होती है। अन्य स्थितियों में समूह का सामूहिक ज्ञान महत्त्वपूर्ण होता है और वास्तव में उस सामूहिक ज्ञान के निर्माण के लिए अनुकूल माना जाता है। “सामूहिक साक्षात्कार सीधे साथी/सहकर्मी की संस्कृति (peer culture) से उभरते हैं क्योंकि बच्चे अपने साथियों के साथ सामूहिक रूप से अर्थ निर्माण करते हैं। सामूहिक साक्षात्कारों में... प्रतिभागी एक दूसरे की बात पर आगे बढ़ते हैं और एक व्यक्तिगत साक्षात्कार की तुलना में वे विभिन्न प्रकार के अनुभवों और विचारों पर चर्चा करते हैं” (Eder & Fingerson, 2003, पृ. 35)।

फोकस समूह को अकसर बच्चों के सामूहिक (collective) दृष्टिकोण या इनके द्वारा जिए गए अनुभवों को समझने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसका उद्देश्य विभिन्न व्यक्तियों की बातों को सुनना नहीं होता बल्कि समूह को ऐसे किसी विषय के बारे में ज्ञान निर्माण करने में व्यस्त करना होता है जिसका उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव हो। उदाहरण के लिए, वेले (Veale, 2005) ने रवांडा के 7 से 17 वर्षीय विस्थापित बच्चों के साथ फोकस समूह तकनीक का इस्तेमाल किया। ये समूह जिन्हें कार्यशाला का नाम दिया गया, “इन्होनें बच्चों द्वारा समुदाय के बच्चों के जीवन के बारे में उनके विचारों के विश्लेषण तथा स्पष्टीकरण का विशेष काम किया” (पृ. 255)। इस प्रक्रिया में उन बच्चों को जिन्होंने बहुत कुछ खोया था, उनको अपने अनुभवों को बाँटने, अपने गुस्से और दुख को व्यक्त करने, तथा अपनी धारणाओं को कहानियों और नाटकों द्वारा साझा करने का अवसर मिला। उनके द्वारा इस्तेमाल की गई गतिविधियों जैसे कि सामाजिक मानचित्रण (social mapping), कहानी आधारित खेल, चित्र, तथा अभिनय का

उद्देश्य “चिन्तन, विवाद, बहस, असहमति और सहमति को बढ़ावा देना था ताकि विभिन्न मतों और स्थितियों (positions) की अभिव्यक्ति को प्रेरित किया जा सके और इस प्रक्रिया द्वारा सशक्तिकरण की नींव पड़ सके” (पृ. 254)। यदि आप मतभेदों को लाक्षणिक (metaphorically) रूप से सोचते हैं तो एक व्यक्तिगत साक्षात्कार एक नली (funnel) के जैसा हो सकता है जहाँ शोधकर्ता साक्षात्कार देने वाले की कहानी का अनुकरण करता है और उसके द्वारा साझा किए गए अनुभवों के बारे में अधिक विस्तार से पूछता है जबकि एक सामूहिक साक्षात्कार एक संबर्स्ट श्रृंखला (sunburst series) की तरह होता है जहाँ साझा किया गया हर अनुभव कई प्रकार के सम्बन्धित अनुभवों को प्रकट करता है।

बहुत से शोधकर्ता यह मानते हैं कि सामूहिक साक्षात्कार बच्चों को व्यस्त करते हैं क्योंकि ये वयस्कों की सत्ता के प्रभाव को कम करते हैं, व्यक्तियों पर जवाब देने के दबाव को कम करते हैं और समूह के अन्य लोगों द्वारा सहारा देते हैं (Hennessy & Heary, 2005, Mauthner, 1997)। हालाँकि शक्ति/सत्ता और हैसियत के अन्तर का प्रभाव बच्चों पर भी दिखता है और यह प्रत्येक सदस्य के योगदान और बातचीत को प्रभावित करता है। हर्वर्थ व अन्य (Hurworth et al., 2005) शोधकर्ताओं को इस बात के लिए सावधान करते हैं कि उन्हें वार्तालापों का अवलोकन करना चाहिए और ध्यान देना चाहिए कि अर्थ किस प्रकार से तय (negotiate) किए जाते हैं क्योंकि “ऐसा सम्भव है कि एक या दो अधिक बोलने वाले प्रतिभागी चर्चा को प्रभावित कर दें और समूह की साझी सहमति को एक तरफ़ मोड़ दें” (पृ. 59)।

फोकस समूह की परस्पर प्रभाव डालने वाली प्रकृति बच्चों की बताने की क्षमता बढ़ा सकती है या फिर सभी बच्चों की मत रखने की योग्यता के साथ दखल कर सकती है। उदाहरण के लिए, दूसरे सामूहिक साक्षात्कार की आखिरी गतिविधि में हमने चौथी कक्षा के प्रत्येक बच्चे को यह वाक्य पूरा करने के लिए कहा– “मैं खुश हूँ कि ELA समाप्त हो गया क्योंकि…” हमारे अर्द्धशहरी ग्रुप के एक छात्र कोरबिन ने तत्परता से अपनी बारी की तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि हम गोल घेरे में एक साथ बैठ कर अन्य लोगों से बातचीत कर रहे थे। अब तक वह सुन रहा था और जब उसकी बारी आई तो उसने कहा :

> *“मैं खुश हूँ कि ELA खत्म हो गया क्योंकि….* मोरगन, लिन और मेगन की तरह मैं भी किताब से या किसी अन्य तरह से नोट्स लिखना पसन्द नहीं करता और हाँ जैसा कि आप जानते हैं कि यह कुछ इस जैसा है कि मानो आप किसी नाटक का अभ्यास कर रहें हैं और जब मैं किसी

नाटक में हिस्सा लेता हूँ तो यह नहीं चाहता कि वह भूमिका करूँ जो मुझे दी गई है। मैं अपना नाटक खुद बनाना पसन्द करता हूँ। यह धूल में स्वच्छन्द होकर बाइक या कोई एक बड़ा ट्रक चलाने जैसा है। जैसा कि डेविड ने कहा, "मुझे यह परीक्षाएँ पसन्द नहीं हैं। मैं वास्तविक परीक्षा पसन्द करता हूँ क्योंकि वास्तविक परीक्षा वह परीक्षा है जिस पर आपका सही आकलन होता है। और क्योंकि हम वास्तविक परीक्षा के केवल 3 सत्र करते हैं, जैसा कि मैंने कहा हर सत्र में तीन प्रिटैस्ट (परीक्षा से पूर्व की परीक्षा) होते हैं, यह 9 से अधिक प्रिटैस्ट लेने जैसा है। हालाँकि जब हम वास्तविक परीक्षा करते हैं तो केवल तीन सत्र ही करते हैं।"

हमारे चौथी कक्षा के शहरी बच्चे भी एक दूसरे को सुन रहे थे लेकिन इस अंश में (ये उदाहरण हमारे सत्रों में उनके सम्पूर्ण व्यवहार को प्रदर्शित नहीं करते हैं), वे बेचैन थे और एक दूसरे के बीच में बोल रहे थे।

अम्बर : *मैं खुश हूँ कि ELA खत्म हो गया क्योंकि...* चुप रहो! *(कुछ बच्चों की ओर इशारा करके जो उसके बारे में बात कर रहे थे)*
विन्सेंट : क्योंकि "चुप रहो" *(चिढ़ाते हुए)*
जैक : *(अम्बर का भाई, अम्बर से कहता है, अम्बर इस दौरान विन्सेंट को देख कर मुँह बना रही थी)* ध्यान रहे जब हम घर जाएँगे तो मैं तुम्हारी खबर लूँगा।
शोधकर्ता : उसे जवाब देने दो।
अम्बर : यह मुश्किल था। क्या आप सुन रहे हैं।
जैक : *मैं खुश हूँ कि ELA खत्म हो गया क्योंकि...* वह उबाऊ था।
विन्सेंट : मैं भी यही कहने जा रहा था।

पारस्परिक वार्तालाप को अकसर फोकस समूह के गुण के रूप में देखा जाता है पर इन वार्तालापों की प्रकृति तय करने के लिए समूह की प्रक्रियाओं का महत्त्व समझना जरूरी है और यह जानना भी कि ये वार्तालाप हमेशा सकारात्मक हों ऐसा जरूरी नहीं है। यह सम्भव है कि समूह में किसी भी तरीके का डर, कुछ सदस्यों को योगदान देने से रोक सकता है (Lewis, 1992)। यह भी सम्भव है कि किसी व्यक्ति द्वारा जाहिर किए गए विचार उसकी समूह के अन्य सदस्यों की हाँ में हाँ मिलाने की इच्छा से प्रभावित हों (Hennessy & Heary, 2005)।

फोकस समूह की अपनी विशेष चुनौतियाँ होती हैं और उनको निर्धारित करना अधिक मुश्किल होता है क्योंकि उन्हें ऐसा समय और जगह चाहिए जिस पर सभी सदस्य सहमत हों। इससे

गोपनीयता के मुद्दे भी पैदा होते हैं क्योंकि एक समूह में की गई बात समूह के बाहर भी दोहराई जा सकती है। एक तरीका यह हो सकता है कि प्रतिभागियों को यह बताया जाए कि जो बात समूह में हुई उसे सामान्य तौर पर तो समूह के बाहर के लोगों से बता सकते हैं परन्तु अधिक विस्तृत जानकारी देना ठीक नहीं है। हालाँकि यह रणनीति कुछ बच्चों के साथ काम कर सकती है, परन्तु इसके लिए उस समूह की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को समझना जरूरी है जिसके साथ आप काम कर रहे हैं। प्रतिभागियों को गोपनीयता की जिम्मेदारी देने से उनमें व्याकुलता (anxiety) पैदा हो सकती है क्योंकि हो सकता है कि क्या साझा नहीं करना है इसके लिए शोधकर्ता के बनाए मापदण्डों को वे समझ न सकें। इसके अलावा जो बात बच्चों में शर्मिन्दगी पैदा कर सकती है, हो सकता है वयस्कों को उससे शर्मिंदगी न महसूस हो। ऐसा लगता है कि यदि चर्चा का विषय इतना संवेदनशील है कि उसे बाहर नहीं दोहराया जाना चाहिए तो शायद ये समूह में चर्चा लायक न हो, खासकर उन बच्चों के साथ जो कि अकसर एक दूसरे से मिलते हों। वे बच्चे जो अकसर नहीं मिलते, उनके समूह बनाना एक विकल्प हो सकता है। अन्य युक्तियों में, बच्चों को फोकस समूह शुरू करने से पहले यह याद दिलाना कि वे केवल वही बात साझा करें जिसे वे बिना किसी झिझक के किसी परिचित को बता सकें या फिर समूह को केवल समान लिंग वाले लोगों की दोस्ती तक सीमित रखें।

पंच (Punch, 2002a) ने बताया कि समान लिंग वाले समूह बनाने का उनका निर्णय जब वह 13-14 साल के बच्चों की समस्याओं, कल्याण और समस्याओं से निपटने के तरीकों के बारे में उनकी अवधारणाओं को पता लगाने की कोशिश कर रहे थे साहित्य पर आधारित था जो यह दर्शाता है कि लड़के और लड़कियाँ अपनी समस्याओं के बारे में अलग ढंग से बात करते हैं और समस्याओं से अलग तरह से निपटते हैं। सिर्फ इसलिए कि एक फोकस समूह एक सामूहिक कार्यक्रम है यह व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं को बाहर आने से नहीं रोक सकते। हमने छात्रों से शान्त रहकर लिखित में जवाब देने को कहा। हालाँकि हम ने छात्रों के जवाबों को दूसरों तक भी पहुँचाया ताकि दूसरे भी उसके नीचे अपनी प्रतिक्रिया लिख सकें। यह उनको प्रतिक्रिया देने, चिन्तन करने तथा दूसरों के जवाबों से असहमत होने का मौका देने जैसा था। इस गतिविधि का दूसरा स्वरूप उत्तरों को साझा ना करना भी हो सकता था जिससे कि प्रतिभागियों की टिप्पणियाँ व्यक्तिगत रह पातीं।

किसी अध्ययन की रूपरेखा तय करते समय प्रत्येक हिस्से पर ध्यान देने चाहिए कि इससे क्या नया जुड़ेगा या यह किसकी जगह पर आएगा। शोध के उद्देश्यों के अनुसार, शोधकर्ता

एक ही कार्य प्रणाली के भीतर विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल करते हैं जैसे कि फोकस समूह या विभिन्न विधियाँ जैसे उन्हीं प्रतिभागियों के साथ व्यक्तिगत और सामूहिक साक्षात्कार आयोजित करना। आठवीं कक्षा की लड़कियों पर किए गए अपने अध्ययन में ओरेंस्टीन (Orenstein, 1994) ने फोकस समूह या निजी साक्षात्कार किए ताकि वह किशोर लड़कियों की समस्याओं को गहराई से समझ सकें। इसके अतिरिक्त माइकल (Michell, 1999) ने 11 साल की लड़कियों के सामूहिक तथा निजी साक्षात्कार में दिए गए जवाबों की तुलना की और पाया कि लड़कियों की सामाजिक स्थिति (उच्च, मध्यम या निम्न) के हिसाब से दोनों साक्षात्कारों में उनकी प्रतिक्रियाओं में काफी अन्तर था। माइकल के नतीजों से हमारी इस धारणा को बल मिलता है कि किसी फोकस समूह की प्रतिक्रिया तथा जवाबों को समझने के लिए उस समूह का सामाजिक सन्दर्भ समझना जरूरी होता है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. हमें अकसर युवा लोगों को सिखाने या मार्गदर्शन करने की जरूरत महसूस होती है। किसी बच्चे के साथ बैठिए और उससे ऐसे बात कीजिए जैसे वह अपनी जिन्दगी या जिन्दगी के किसी पहलू का विशेषज्ञ है। बच्चे को किसी ऐसे विषय पर बात करने को कहिए जो उसे महत्त्वपूर्ण या रोचक लगता हो। बच्चे के लिए आप से बात करना कितना आसान या कठिन था? आपके लिए बातचीत में उसे नेतृत्व करने देना कितना आसान या मुश्किल था? आपके अनुसार किस वजह से यह आसान या मुश्किल हुआ? संवाद को एक वास्तविक बातचीत में बदलने के लिए आप क्या अलग कर सकते थे?

2. 10 प्रश्नों का एक ऐसा साक्षात्कार प्रोटोकॉल विकसित कीजिए जो आप अपने प्रतिभागी बच्चों से पूछना चाहेंगे। हर प्रश्न के लिए खुले प्रश्नों के अतिरिक्त तरीके सोचिए, जैसे लेखन कार्य, खेल फोटोएलिसिटेशन विधि, चित्रण आदि। इनको किसी साथी के साथ साझा कीजिए। इस वार्तालाप से विकसित हुई समझ के आधार पर प्रोटोकॉल को पुनः विकसित कीजिए।

•